|  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| क्र. स. | कोर्स शीर्षक | कोर्स कोड | कक्षा | Course Outcome |
| 1. | प्रयोजनमूलक हिन्दी (अनिवार्य हिन्दी ) | HIND101 | बी०ए०/ बी. कॉम प्रथम वर्ष | 1.इस कोर्स को पढ़ने के बाद विद्यार्थी सामान्यतः कार्यालयी कार्य का व्यावहारिक ज्ञान अर्जित कर पाएंगे|  2.इस कोर्स को पाठ्यक्रम में रखने का उद्देश्य यही है कि विद्यार्थी अपने सामान्य चयनित विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हुए कार्यालय की गतिविधियों को भी सीख सकें।  3.इस हेतु पाठ्यक्रम में प्रारूपण, टिप्पण, प्रतिवेदन के अतिरिक्त पत्राचार से संबंधित विविध पहलुओं को स्थान दिया गया है भाषिक क्षमता के विकास के लिए व्याकरण के सामान्य विषयों के साथ-साथ अनुवाद, कार्यालय अनुवाद, देवनागरी लिपि के संबंध में सम्यक जानकारी के अतिरिक्त कंप्यूटर में हिंदी के प्रयोग के विषय में भी विद्यार्थी विविध जानकारी प्राप्त सकेगे| |
| 2. | हिन्दी साहित्य का इतिहास (DSC-A) | HIND102 | बी०ए०/ प्रथम वर्ष | 1.इस कोर्स को पढ़ने के बाद विद्यार्थी हिंदी साहित्य के आरंभ से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास को समझ पाएंगे।  2. हिंदी साहित्य के इतिहास को चार कालखंडों में बांटा गया है और विद्यार्थी पाठ्यक्रम की चार इकाइयों में इस बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।  3. हिंदी साहित्य का प्रथम काल आदिकाल से लेकर अब तक राजनीतिक,धार्मिक, सांस्कृतिक आदि कारणों से हिंदी साहित्य में क्या परिवर्तन आए और क्यों इसकी गहन जानकारी विद्यार्थियों को दे पाएंगे|  4. हिंदी साहित्य के क्रमिक विकास और प्रवृत्तियों को समझना ही कोर्स का उद्देश्य है। |
| 3. | मध्यकालीन हिंदी कविता (DSC-1B) | HIND103 | बी०ए०/ प्रथम वर्ष | यह कोर्स उन विद्यार्थियों के लिए बनाया गया है जिन्होंने एक के रूप में हिंदी का चयन किया है। इस कोर्स को पढ़ने के बाद विद्यार्थी मध्यकाल अर्थात् भक्तिकाल और रीतिकाल के 4-4 कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी प्राप्त करते हुए पाठ्यक्रम में निर्धारित पद्य अथवा पद्मांशों की व्याख्या करते/समझते हुए हिंदी साहित्य की आरंभिक प्रकृति, प्रवृतियों और विशेषताओं को और अधिक गहराई से समझ पाएंगे और चयनित कवियों का उस कल खंड के साहित्य में क्या महत्त्व था यह भी जान पाएंगे। |
| 4 . | हिंदी भाषा और संप्रेषण  (AECC-2) | HIND104 | बी०ए०/ बी. कॉम. प्रथम वर्ष | इस कोर्स को पढ़ने के बाद विद्यार्थी-  भाषा के अर्थ, भाषा की प्रकृति और भाषा के विविध रूपों को जान पाएंगे|  हिंदी व्याकरण समास, विशेषण, क्रिया, संज्ञा एवं सर्वनाम आदि को जान पाएंगे|  हिंदी की वर्ण व्यवस्था स्वर और व्यंजनों को जान पाएंगे|  वाक्य के भेदों को जान पाएंगे| |
| 5. | 'रचना पुंज' (अनिवार्य हिन्दी ) | HIND201 | बी०ए०/ बी. कॉम. द्वितीय वर्ष | यह कोर्स बी.ए. और बी. कॉम. के सभी विद्यार्थियों को साहित्य के सामान्य अनुभवों को प्राप्त करने के लिए बनाया गया है।  इसका उद्देश्य यही कि विद्यार्थी अपनी रुचि और अध्ययन की प्राथमिकताओं/ आवश्यकताओं के अनुरूप वे जो कुछ भी पढ़े किन्तु एक साहित्यिक अनुभव और दृष्टि उनके सोचने, समझने और अनुभव के दायरे में गुणात्मक परिवर्तन ला सकता है औरउन्हें जीवन के प्रति और अधिक जागरूक और संवेदनशील बना सकता है। इस में कविताओं; कहानियों और अन्य गद्य रचनाओं का चयन इसी दृष्टि से किया गया है। इस कोर्स को पढ़ने के बाद विद्यार्थी में साहित्य की एक सामान्य समझ और समग्रतः जीवन के प्रति एक सवेदनशील दृष्टि विकसित हो सकेगी । |
| 6. | आधुनिक हिंदी कविता (DSC- 1C) | HIND202 | बी.ए. द्वितीय वर्ष | यह कोर्स विद्यार्थियों को आधुनिक कालीन कविता की संवेदना से अवगत करवाने के लिए बनाया गया है। इस कोर्स में आधुनिक काल के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अतिरिक्त उसी दौर के अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' से लेकर नई कविता तक के चुने हुए कवियों की चयनित कविताओं के माध्यम से हिंदी की आधुनिक कविता को समझना /समझाना इसका लक्ष्य है। इस कोर्स को पढ़ने के बाद विद्यार्थियों को आधुनिक कविता की विविध काव्यधाराओं का अनुशीलन करवाते हुए उनमें विशिष्ट कवियों के योगदान और उन कवियों की विशिष्ट संवेदना, काव्य दृष्टि और अभिव्यक्ति कौशल से अवगत करवाया जा सकेगा। |
| 7. | हिंदी गद्य साहित्य (DSC-1D) | HIND203 | बी.ए. द्वितीय वर्ष | इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है विद्यार्थियों को गद्य की विविध विधाओं कहानी, निबन्ध और उपन्यास से परिचित करवाना और पाठ्यक्रम में निर्धारित उपन्यास, कहानियों और निबंधों का पाठगत अध्ययन करते हुए कलात्मक अनुभव से गुजरते हुए, इन विधाओं के माध्यम से जीवन को उसकी व्यापकता में सूक्ष्मता से समझने/समझाने का प्रयास तथा गद्य की इन विधाओं की समीक्षा की योग्यता का विकास । |
| 8. | कार्यालयी हिंदी (SEC-1) | HIND204 | बी.ए. द्वितीय वर्ष | इस कोर्स के अध्ययन के बाद विद्यार्थी भाषा के रूप में हिंदी भाषा की स्वरूपगत विशिष्टता की पहचान करते हुए भाषा के विभिन्न रूपों की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे तथा राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जनभाषा, संचार की भाषा आदि के रूप में हिंदी की विकासयात्रा से भी विद्यार्थी अवगत हो पाएंगे। कार्यालय के स्तर पर भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के लिए आवश्यक क्षमता तथा भाषाई कौशल का विकास और हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए नवीनतम यांत्रिक उपकरणों के अनुप्रयोग के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना भी इस कोर्स का लक्ष्य है। |
| 9. | अनुवाद विज्ञान (SEC-2) | HIND206 | बी.ए. द्वितीय वर्ष | इस कोर्स के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी-  आधुनिक काल में अनुवाद की आवश्यकता को समझते हुए अनुवाद के विविध पहलु‌ओं से अवगत हो पाएंगे। इस हेतु- अनुवाद के अभिप्राय को स्पष्ट करना,अनुवाद के स्वरूपगत भेदों की जानकारी, अनुवाद के विषयगत विविध प्रकारों यथा-कार्यालयी, साहित्यिक, विज्ञानपरक, विधिक, वाणिज्यिक आदि के बारे में सूक्ष्म और सविस्तार जानकारी देना । साहित्यिक अनुवाद के विभिन्न रूपों के सूक्ष्म अंतर को समझना । अनुवाद के लिए तकनीकी शब्दावली के अनुवाद, मुहावरों/लोकोक्तियों के अनुवाद आंचलिक शब्दावली के अनुवाद तथा भाषा के लाक्षणिक और व्यंजनापरक प्रयोगों के अनुवाद में आने बाली कठिनाइयों को समझते हुए अनुवाद के लिए आवश्यक योग्यता के अर्जन के लिए कौशल का विकास । विश्वभाषाओं के प्रमुख कृतियों के हिंदी अनुवाद तथा हिंदी की प्रमुख कृतियों के विश्वभाषाओं में किए गए अनुवाद के सन्दर्भ में सम्यक जानकारी देना तथा अनुवाद के क्षेत्र में सक्रिय विभिन्न संस्थाओं के सन्दर्भ में जानकारी देते हुए अनुवाद के महत्त्व का प्रतिपादन करना | |
| 10. | रंग आलेख एवं रंगमंच  (SEC-3) | HIND301 | बी.ए. तृतीय वर्ष | इस कोर्स के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी नाटक विधा के प्रचलित प्रमुख प्रकारों की सविस्तार जानकारी प्राप्त कर पाएंगे| भारतीय नाट्यशास्त्र और नाट्यलेखन के इतिहास की जानकारी प्राप्त करते हुए विद्यार्थी नाटक की विविध प्रवृत्तियां सामाजिक सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि से अवगत हो पाएंगे|  हिंदी के प्रमुख नाटकों और नाटककारों की जानकारी प्राप्त करते हुए रंगमंच के प्रमुख रूपों शोकिया मंच व्यावसायिक मंच इत्यादि के बारे में जान पाएंगे तथा प्रसिद्ध रंगशालाओं और संस्थाओं की जानकारी भी प्राप्त कर पाएंगे| नाटक के शिल्प पक्ष की विस्तृत जानकारी प्राप्त करते हुए निर्देशन, अभिनय, रंगमंचीय भाषा और रंग आलेख प्रवृत्ति की सूक्ष्म जानकारी प्राप्त करते हुए रंग समीक्षा को समझ पाएंगे| |
| 11. | समाचार संकलन और लेखन  (SEC-4) | HIND304 | बी.ए. तृतीय वर्ष | इस कोर्स के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी समाचार की अवधारणा को समझते हुए समाचार के बुनियादी तत्वों, समाचार के स्रोतों, समाचार के संग्रह पद्धति और लेखन प्रक्रिया को समझ पाएंगे|  समाचारों के सामान्य वर्गीकरण, संवाददाता की भूमिका, व्यवहार संहिता को समझते हुए रिपोर्टिंग के विविध क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे| इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से प्राप्त समाचारों के पुनर्लेखन के संबंध में विस्तार से जान पाएंगे| |
| 12. | लोक साहित्य  (DSE-1A) | HIND305 | बी.ए. तृतीय वर्ष | इस कोर्स के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी लोक साहित्य की अवधारणा और स्वरूप को समझते हुए लोक संस्कृति और लोक साहित्य के अन्तर सम्बन्धो साहित्य के अध्ययन की प्रक्रिया और लोक साहित्य के संकलन की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करते हुए लोक साहित्य के विविध रूपों लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा एवं लोकगाथा आदि के बारे में जान पाएंगे|  हिमाचल प्रदेश में प्रचलित विभिन्न लोककथाओं को जान पाएंगे| |
| 13. | छायावादोत्तर हिंदी कविता (DSE-1B) | HIND306 | बी.ए. तृतीय वर्ष | इस कोर्स को पढ़ने के बाद विद्यार्थी- रोमानी/स्वछंदतावादी/छायावादी कविता से आगे जब कवि व्यक्तिगत और सामाजिक यथार्थ को शब्दों में उकेर कर कविता को भौतिक जीवन के समीप लाकर अधिक ग्राह्य बनाने का प्रयास करते हैं, उस दौर के प्रमुख कवियों अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन, शमशेर बहादुर सिंह, भवानीप्रसाद मिश्र, कुँवर नारायण , सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और केदारनाथ सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दृष्टिपात करते हुए उनकी चयनित कविताओं के माध्यम से छायावाद के बाद के उस युग की साहित्यिक संवेदना को समझने और अनुभूत कर सकने की योग्यता प्राप्त कर पाएंगे। |